ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 30-32
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

Dr. BINDU MG
ASSOCIATE PROFESSOR
DEPARTMENT OF HINDI
MAHARAJAS COLLEGE
ERNAKULAM

Corresponding Author :

Dr. BINDU MG
ASSOCIATE PROFESSOR
DEPARTMENT OF HINDI
MAHARAJAS COLLEGE
ERNAKULAM

आंचलिकता के परिप्रेक्ष्य में आधा गांव उपन्यास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

किसी खास अंचल या गांव को केंद्र में रखकर लिखने की पद्धति को आंचलिकता शब्द के साथ जोड़ सकते हैं। अंचल या गांव की अपनी मौलिकता होती है। उनके रीति रिवाज, आचार विचार, परंपरा, विश्वास आस्था, बोलचाल धार्मिक मान्यताऐं सब उनके अपने होते हैं। हिन्दी साहित्य में विशेषकर हिंदी उपन्यासों में आंचलिकता की अभिव्यक्ति स्वातंत्र्योत्तर काल में शुरू हुई थी। आंचलिक उपन्यास में कोई नायक या नायिका नहीं होता। संपूर्ण ग्रामांचल ही उसका विषय होता है।

गांव या अंचल अंग्रेजी शासनकाल में सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से हाशिए पर थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी उनकी स्थिति जैसा का तैसा रह गया। अंचल की जनता के उद्धार केलिए अधिकारी वर्ग कुछ नहीं करते थे। इस संदर्भ में हमारे साहित्यकार सचेत हो उठे। अंचल की शोचनीय अवस्था की ओर सबका ध्यान आकर्षित करने का दायित्व उन्होंने उठा लिया।

हिन्दी के आंचलिक उपन्यासकारों में सर्वप्रमुख है श्री फणीश्वरनाथ रेणु। उनका विख्यात उपन्यास है मैला आंचल। इस उपन्यास में उन्होंने आंचलिकता को उसकी समग्रता के साथ चित्रित किया है। रेणुजी के अलावा शिवपूजन सहाय, नागार्जुन, भैरवप्रसाद गुप्त, मार्कण्डेय आदि भी हिन्दी के विख्यात आंचलिक उपन्यासकार हैं।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासकारों में डां राही मासूम रज़ा का अलग स्थान है।। वे एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। उपन्यासकार के रूप में उनकी अधिक ख्याति हुई है। आधा गांव

उनका एक बहुचर्चित आंचलिक उपन्यास है। इस उपन्यास में रज़ा ने गांव के जीवन को उसकी पूरी सच्चाई के साथ चित्रित करने का कार्य किया है।

आधा गांव में रज़ा ने उत्तर प्रदेश के गांजीपूर जिले के गंगौली गांव को पृष्ठभूमि बनाई है। उन्होंने गंगौली के आधे हिस्से को ही कथा भूमि बनाया है। इसके बारे में रज़ा स्वयं कहते है - "मैंने पूरे गांव को नहीं चुना, बल्कि गांव के उस टुकड़े को चुना जिसे मैं अच्छी तरह जानता हूं"[1]

आंचलिक उपन्यास में उपन्यासकार का उस अंचल का निवासी होना बहुत जरूरी है। साथ ही वह उस अंचल की समस्त विशेषताओं का जानकार भी हो। रज़ा तो गंगौली गांव का निवासी है। उस गांव के साथ उनका उतना निकटतम संबंध भी है। "मैं गंगौली का हूं क्योंकि वह केवल एक गांव ही नहीं है क्योंकि वह मेरा घर भी है"[2]।

आधा गांव में गंगौली के शिआ मुसलमानों के जीवन कथा का वर्णन है। साथ ही वहां रहने वाले जनता के बीच के आपसी संबंधों, प्रेम और सहकारिता को उन्होंने उपन्यास में दिखाया है।

गंगौली के जन जीवन के साथ जुड़े हुए आचार विचार,रीति रिवाज, अन्धविश्वास, रुढ़ियां, परंपराएं आदि का विस्तृत वर्णन करते हुए रज़ा ने गंगौली नामक ग्रामांचल को पूर्णता के साथ पाठक के सामने लाने का सराहनीय कार्य किया है।

गंगौली गांव को उत्तर पट्टी और दक्षिण पट्टी नाम से विभाजित किया गया है। वहां के लोगों के अपने अपने रीति रिवाज है। किन्तु इन सबके ऊपर वे सब गंगौली के ही है। मोहर्रम तो गंगौली वासियों का धार्मिक त्यौहार है। इस त्योहार का उपन्यास में विस्तृत वर्णन दिया गया है। यह मोहर्रम ही गंगौली वासियों के आपसी संबंध को इतना सुदृढ़ बनाता है।इमाम हुसैन जो मुसलमान केलिए पूजनीय है। उनकी हत्या हो जाने के बाद मुसलमान लोग उनकी याद में ढाई महीने तक का मोहर्रम मनाते है। उनका विश्वास है कि इमाम हुसैन मोहर्रम के समय हिन्दुस्तान आते हैं और दसवीं बैठक के बाद वे वापस कर्बला लौटते हैं इमाम हुसैन की मृत्यु की याद में वे मातम करते हैं। इसके लिए अनेक विधिवधानें है। इनका वे सब अक्षरशः पालन करते हैं। इस प्रकार के कई अन्धविश्वास गंगौली गांव में व्याप्त थे।

आधा गांव उपन्यास का सर्वप्रमुख पात्र गंगौली गांव ही है। गांव को उसकी पूर्णता में लाने केलिए वहां के समस्त पात्रों को उपन्यास में लाना जरूरी है। गंगौली गांव के सभी लोगों को रज़ा ने उपन्यास में स्थान दिया है। फुन्नन मियां,अब्बू मियां,सईदा, मौलवी बेदार आदि इनमें प्रमुख हैं। अतः आधा गांव किसी एक व्यक्ति की कहानी नहीं है यह गंगौली गांव और वहां की जनता की कहानी है।

रज़ा ने गंगौली वासियों के सामाजिक जीवन का सत्यांकन उपन्यास में की है। उनके परिवार, रहन-सहन, खान-पान स्त्रीयों की स्थिति, अनैतिक यौन संबंध छूआछूत आदि का विस्तृत वर्णन उपन्यास में है।

गांव के निवासी निष्कलंक होते हैं। साथ ही अशिक्षित भी। इसलिए छोटी-छोटी बातों को लेकर वे लड़ते झगड़ते रहते हैं।लड़के को जन्म न देने के कारण सकीना का सांस उसको हमेशा कोसती रहती है "यहां तक कि फिर लड़की हो जाती और फुस्सु कि मुंह लटक जाता और बब्बन बी हाथ उठा उठाकर सक्कीना को कोसने लगती है – लड़की -ये लड़की पैदा तो किए जा रही हौ – बकी ई घर मेंरो कड न धरा है"[3]

गांव में स्त्रियों की स्थिति बहुत शोचनीय है। निम्न जाति के स्त्रीयों के साथ पुरुषों का अनैतिक यौन संबंध है। "दूसरा ब्याह कर लेना या किसी ऐरी गैरी औरत को घर में डाल लेना बुरा नहीं समझा जाता था। शायद ही मियां लोगों का कोई ऐसा खानदान हो जिसमें कलमी लड़के और लड़कियां न हो जिनके घर में खाने को भी नहीं होता वे भी किसी न किसी प्रकार कलमी आमों और कलमी परिवार का शौक पूरा कर ही लेते है"[4]

गंगौली गांव में जातिगत उच्चनीचत्व की समस्या है। शिआ सुन्नी के बीच आपसी स्पर्धा है। शिआ मुसलमान खुद को उच्चस्तरीय मानते है। अन्य जातियों के साथ इनका कोई मेलजोल नहीं है। हिन्दु

लोगों को भी ये अलग हटकर रखते हैं। निम्न जाति के लोगों की चीजें वे छुएंगे नहीं। "मुसलमान तो मौलवी बेलदार है जो हिन्दुओं का छुआ नहीं खाते। मुसलमान तो हक्कीम अली कबीर है जो बात बात पर दरवाजे के हौज में अपने को पाक रखने केलिए नहाते रहते हैं"[5]

आधा गांव उपन्यास में गंगौली गांव के रीति-रिवाज आचार अनुष्ठान आदि का विस्तृत वर्णन है। शादी ब्याह के संदर्भ में किए जाने वाले विभिन्न अनुष्ठान, उस अवसर पर गाये जाने वाले विभिन्न गीत, खेल तमाशा आदि बातों के वर्णन के द्वारा रज़ा ने गंगौली के लोकजीवन का असली रूप पाठक के सामने रखा है।

गांव के निवासी एक तरफ अशिक्षित हैं दूसरी तरफ अज्ञानी भी। गांव के बाहर की दुनिया से वे अनभिज्ञ हैं। गंगौली गांव की जनता भी इसी प्रकार के है। "मियां लोगों के ख्याल में दुनिया गाजीपुर की कचहरी के बाद खत्म हो जाती है।, इसलिए उन्हें नहीं मालूम था कि दुनिया में क्या हो रहा है और क्या नहीं हो रहा है"[6]।

आंचलिक उपन्यास में भाषा का विशेष महत्व है। जिस अंचल को लेकर उपन्यास लिखते हैं शर्त है कि भाषा उसी अंचल की हो। आधा गांव उपन्यास में रज़ा ने गंगौली की बोली भोजपुरी को लिया है। असल में इस बोली से साधारण पाठक अनभिज्ञ है किन्तु गांव को उसकी संपूर्णता में उतारने केलिए रज़ा ने इस बोली का प्रयोग किया है।

इसलिए ही उपन्यास के सभी पात्र सहज स्वाभाविक और जीवन्त होकर पाठक के मन में पैठ जाते हैं । भाषा में उन्होंने श्लील अश्लील का कोई ध्यान नहीं दिया है। गालियों का खुला प्रयोग किया है। हरामजाद, साली, मादरजात जैसी गालियां उपन्यास में कई जगहों पर दिखाई पड़ता है।

निष्कर्ष रूप से कहेंगे तो आधा गांव गंगौली गांव के आधे हिस्से की कहानी है। एक आंचलिक उपन्यास के रूप में यह उपन्यास पूर्णतः सफल है। क्योंकि गंगौली गांव को, वहां के लोकजीवन को रोचक ढंग से पाठक तक पहूचाने का स्तुत्य कार्य इसमें किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधा गांव: डॉ राही मासूम रज़ा: पृष्ठ संख्या – 302
2. आधा गांव: डॉ राही मासूम रज़ा: पृष्ठ संख्या:- 303
3. आधा गांव: डॉ राही मासूम रज़ा: पृष्ठ संख्या:- 115
4. आधा गांव: डॉ राही मासूम रज़ा: पृष्ठ संख्या:- 18
5. आधा गांव: डॉ राही मासूम रज़ा:- पृष्ठ संख्या:- 181
6. आधा गांव: डॉ राही मासूम रज़ा:- पृष्ठ संख्या:- 71

•